

सी.आई.एस.एच. समाचार

01 जुलाई - 31 दिसंबर, 2018

संख्या : 02

निदेशक की कलम से



भारतीय उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र फलों, सब्जियों, कंद, फसलों, फूलों, मशरूम, मसालों, औषधीय और सुगंधित पौधों की एक विस्तृत श्रृंखला का उत्तम निवास स्थान है। बागवानी क्षेत्र में ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के बेरोजगार युवाओं को उद्यमिता और रोजगार के अवसर प्रदान करने की असीम क्षमता है। बागवानी की प्रौद्योगिकियों के प्रमुख लाभार्थी लघु और सीमांत किसानों के द्वारा ही बागवानी का अधिकांश उत्पादन हुआ तथा जिसने उन्हें उद्यमिता अपनाने के लिये सुयोग्य बनाया है। भा.कृ.अनु.प.—केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ ने बागवानी प्रौद्योगिकियों के प्रमुख क्षेत्रों में किसानों, ग्रामीण महिलाओं तथा बेरोजगार युवाओं की क्षमता विकास में सहायता की है। एस्की द्वारा वित्त-पोषित गार्डनर्स प्रशिक्षण के अंतर्गत काफी संख्या में युवाओं की क्षमता का विकास किया गया है। मैनेज द्वारा वित्त-पोषित 'फलों के प्रमाणित फार्म 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में 6 राज्यों के प्रतिभागियों ने सलाहकार' विषयक कार्यक्रम में

हिस्सा लिया। उद्यमिता पर मॉडल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में देश के विभिन्न हिस्सों से विस्तार अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। तीन बागवानी उद्यमिता सेमिनारों का भी आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में युवा सम्मिलित हुए। संस्थान द्वारा आम आधारित पोल्ट्री फार्मिंग, टिशू कल्चर, नर्सरी और मशरूम उत्पादन में उद्यमिता का विकास किया गया है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान, संस्थान ने आदिवासी ग्रामीण महिलाओं की जागृति सशक्तिकरण और आदिवासी न्यूट्री स्मार्ट गाँव के माध्यम से आदिवासी किसानों के साथ मिलकर कार्य किया। संस्थान द्वारा चार विभिन्न संस्थानों से 313 छात्रों को स्टूडेंट रेडी के तहत प्रशिक्षण दिया। संस्थान ने राष्ट्रीय एकता दिवस, किसान दिवस, सतर्कता जागरूकता सप्ताह, विश्व मृदा दिवस, महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती और स्वच्छता पखवाड़ा भी मनाया।

शैलेन्द्र राजन
(शैलेन्द्र राजन)

अनुसंधान के मुख्य अंग

बेल की उत्तम अभिगमनों की पहचान

प्रक्षेत्र जीन बैंक में बनाये गये 36 अभिगमनों में से, एक अभिगमन सी.आई.एस.एच. बी-3 की पहचान सर्वोत्तम अभिगमन के रूप में की गयी। इसके फल का आकार अंडाकार तथा लंबाई एवं परिधि क्रमशः 11.48 सेंटीमीटर और 42.20 सेंटीमीटर एवं पकने पर पीले हरे रंग का होता है। इस किस्म का औसत फल वजन 1.41 किलोग्राम एवं फलों की औसत उपज 42.35 किलोग्राम प्रति वृक्ष (10 वर्ष की आयु) दर्ज की गयी है। फल का छिलका पतला (2.14 मिलीमीटर मोटी), गूदा गहरे पीले रंग का, स्वाद में मीठा एवं इसमें लसदार पदार्थ भी कम होते हैं। एक फल में औसतन 82 बीज संख्या और बीज का औसत वजन 11.15 ग्राम दर्ज किये गये हैं।



फलों की गुणवत्ता भी अच्छी पायी गयी। इसमें घुलनशील ठोस कुल सामग्री (38.10° ब्रिक्स), अम्लता (0.41%), विटामिन 'सी' (15.60 मिलीग्राम/100 ग्राम गूदा), कुल कैरोटेनॉयड (2.14 मिलीग्राम/100 ग्राम गूदा) और टैनिन (2.76%) पाये गये।

आम की जीर्णोद्धार प्रौद्योगिकी का परिष्करण

पुराने तथा अनुत्पादक आम के बागों में न्यून उत्पादन तथा गुणवत्ता एक मुख्य बाधा रही है। भा.कृ.अनु.प.—केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ द्वारा तथा केन्द्र/राज्य कृषि विभागों द्वारा वृहत रूप से प्रचारित किया गया जिससे कि इसका प्रभाव दिखे। इसमें कोई शक नहीं कि प्रौद्योगिकी ने प्रभाव दिखाया है तथा जीर्णोद्धार प्रक्रिया के दौरान जहाँ भी कटाई की गयी है उसका सकारात्मक परिणाम आया है। किसानों के प्रक्षेत्र में जीर्णोद्धार का विश्लेषण करने पर उनमें सफलता का प्रतिशत 50-60 देखा गया। विभिन्न ग्राहक समूहों द्वारा इस तकनीक को अपनाने और आगे विस्तार करने में तना भेदक का संक्रमण और पेड़ को काटने के कारण आय में एक दम कमी दो महत्वपूर्ण

अड़चने थीं। इन बाधाओं को ध्यान में रखते हुए, जनवरी 2016 के दौरान कटाई-छँटाई सिद्धांतों के आधार पर विभिन्न ऊँचाइयों पर प्राथमिक शाखाओं की कटाई की विभिन्न प्रणालियों को लागू किया गया था। क्रमिक तरीके से 3 वर्ष की अवधि में प्राथमिक शाखाओं के कटिंग का भी प्रयास किया गया था। जिन पेड़ों में हर वर्ष दो शाखायें काटी गयीं उनमें काफी स्वस्थ शाखाओं के साथ बहुत अच्छा क्षेत्र विकास देखा गया। तना भेदक का संक्रमण भी नहीं के बराबर था। पहले 2 वर्षों के दौरान शेष शाखाओं से 40 से 150 किलोग्राम/वृक्ष की दर से फल प्राप्त किया गया।



उत्तर पूर्वी राज्यों में अमरूद उत्पादन में सफलता

भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में अमरूद की बढ़ती माँग को देखते हुए वर्ष 2015 में "पूर्वोत्तर पर्वतीय उपयोजना" के तहत बढ़ती माँग को पूरा करने के लिये भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ द्वारा पौधों का रोपण कर अमरूद के मातृ खंडों की स्थापना की गयी। एक रणनीतिक योजना के रूप में चयनित किसानों को विशेष रूप से अमरूद नर्सरी बढ़ाने, फल उत्पादन और प्रसंस्करण पर प्रशिक्षित किया गया। सदम, दक्षिण सिक्किम के उत्साही किसानों में से एक श्री देव प्रसाद प्रधान ने अमरूद की मातृ खंड को स्थापित किया और ग्रापिंग के



द्वारा 50,000 से भी अधिक पौधे तैयार किये। श्रीमती चन्द्र कला दहल सदस्य, जिला पंचायत ने बताया कि भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमान खेड़ा, लखनऊ की किस्में बहुत अच्छी तरह से फलती हैं और इसके फल स्थानीय स्तर पर उपलब्ध अमरूद की किस्मों की तुलना में अधिक गुणवत्ता के होते हैं। अरुणाचल प्रदेश में

2017-18 के दौरान अमरूद की विभिन्न किस्मों के 22,420 पौधों के मातृ खंड की स्थापना की गयी और अंततः भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ के परामर्श से नाहरलागुन, अरुणाचल प्रदेश के एगो ग्रामीण यूनाइटेड द्वारा एक लाख से अधिक वृक्षारोपण किया गया। निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ ने दिसंबर 2018 के दौरान अपनी यात्रा में इस संदर्भ में बड़ी सफलता देखी। भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ-ललित प्रजाति के फलों का आकर्षक लाल रंग विकसित होना शानदार रहा।

आम की बाग आधारित मुर्गी पालन

पूर्वी उत्तर प्रदेश में आम की कल पट्टियों के छोटे और सीमांत किसानों को कई कारणों से बहुत कम लाभ मिलता है। आम के उत्पादन से पूरे साल नकदी की उपलब्धता नहीं हो पाती है। मुर्गीपालन के साथ आम के बागों का एकीकरण से किसानों की आय बढ़ा सकता है और पूरे वर्ष आय सुनिश्चित कर सकता है। भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ ने आम और अमरूद के किसानों के साथ भागीदारी के माध्यम से आम की बाग आधारित मुर्गी पालन प्रथा का विकास किया तथा स्थानीय स्तर पर उपलब्ध बांस और तार की जाली की मदद से आम के बागों के लिए 5,000-10,000 की लागत के प्रभावी रैन बसेरों को विकसित किया गया। बर्बाद आनाज, स्वस्थाने तैयार किये गये एजोला माइक्रोफिला, सूखे बरसीम के पत्तों, घास, घास के बीज प्राकृतिक रूप से उपलब्ध आम कीट का उपयोग कर एक अनूठी, लागत प्रभावी मुर्गी पोषण तकनीक विकसित की गयी थी। प्रत्येक किसान द्वारा एक वर्ष में 4 से 6 चक्रों के लिए ग्रामीण मुर्गी की नस्लों के चूजों को 250 से 300 के बैच में पाला गया। 1.5 किलोग्राम के शरीर के वजन को प्राप्त करने के बाद पक्षियों को धीरे-धीरे हटाया गया और शुरुआती बैच के 2 महीने बाद ताजा बैच प्रदान किये गये और चक्र जारी रखा गया। पक्षियों द्वारा कीटों के प्यूपा, लार्वा, मैगेट्स और छेदक जो कि आम के पेड़ों के नीचे पाये जाते हैं, को खाया गया अतः आम के



कीटों की आबादी भी कम हुई और कीटनाशकों के छिड़काव में भी भारी गिरावट आयी। कड़कनाथ जैसे कुछ पक्षी ने उच्च उड़ान का प्रदर्शन किया और ऊँचाई पर स्थित आम के भुनगा और जाला कीट को भी अपना भोजन बनाया। आम के बाग में प्रत्येक पक्षी अपने पूरे जीवन काल में मल के रूप में 45 किलोग्राम खाद की पूर्ति करता है। 500 पक्षियों के झुंड के आकार वाले बागों में लगभग 225 क्विंटल पोल्ट्री खाद मिलती है। भोजन ढूँढने के दौरान पक्षी मिट्टी की खुदाई करते हैं जिससे मिट्टी में बेहतर वायु संचरण सुनिश्चित होता है। ग्रामीण कुक्कुटों को बागों में संघटित कर किसानों ने एक एकड़ बाग में 4.64 का आकर्षक आय-व्यय अनुपात हासिल किया।

बायो इनहेन्सर का प्रदर्शन

बायो इनहेन्सर एक विशेष प्रकार का जैविक मिश्रण है जो कि गाय के गोबर को अंडे के छिलके के चूर्ण और बेसाल्ट/बेंटोनाइट पाउडर के साथ मिला 3x2x1.5 फीट के गड्ढे में सड़ने के लिये रखा जाता है। खाद बनाने की प्रक्रिया को उत्प्रेरित करने के लिये



बी.डी.-502 बी.डी.-507 के दो सेट मिश्रित किये जाते हैं। एक अध्ययन में सी.पी.पी. इस उत्पाद के प्रति ग्राम मात्रा में स्यूडोमोनास (6.8×10^6), फॉस्फेट को घोलने वाले बैक्टीरिया (8.4×10^6), राइजोबियम (3.10×10^6), एजोस्परिल्लम (2.24×10^7), एजोटोबैक्टर (2.86×10^6) और कवक (8.3×10^5) के स्तर पर पाया गया है। इसमें उच्च मात्रा में बेसिलस सबटिलिस (1.9×10^6) पाया गया जो रोग प्रबंधन में सहायक होता है।

आम के जाला कीट का जैव प्रबंधन

प्रारंभ में जाला कीट के सूँडियाँ पत्तियों की सतह को खुरच कर खाती हैं। तत्पश्चात वे मुलायम टहनियों और पत्तियों को जाले से एक साथ जोड़ लेती हैं और अंदर-ही-अंदर उन्हें भी खाती हैं। इस कीट के प्रबंधन के लिये जुलाई के अंतिम सप्ताह में पत्तियों के जालों को तोड़कर पंजे से आवश्यकतानुसार उनमें दो बार लैम्बडा साइहैलोथिन का छिड़काव किया जाता रहा है। पर्यावरण के अनुकूल प्रबंधन विकसित करने के लिये नीम के तेल तथा कीट रोगकारी कवक (*बिवेरिया बेस्सीआना*) के कीटनाशक गुणों का प्रयोगशाला में प्रयोगों के दौरान मूल्यांकन किया गया। स्टिकर के साथ 3 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से नीम का तेल प्रायोग करने से एक दिन में तीसरे इंस्टार लार्वा की 100 प्रतिशत मृत्यु पायी गयी है। *बिवेरिया बेस्सीआना* (2×10^8 बीजाणु/मिली लीटर) का 5 ग्राम प्रति लीटर के दर से उपचार के पाँचवें दिन 80 प्रतिशत तक का मृत्यु दर पायी गयी है। चूँकि *बिवेरिया बेस्सीआना* में नीम के तेल को मिलाकर प्रयोग किया जा सकता है इसलिए जाला कीट के लंबे समय तक प्रबंधन के लिये दोनों का एक साथ प्रयोग किया जा सकता है।



आँवला आधारित ब्राह्मी स्क्वाश का विकास

ब्राह्मी (*बाकोपा मॉनिएरी/सेंटेला ऐसिअटिका*) अपने उच्च औषधीय गुणों के लिये जाना जाता है। इस जड़ी बूटी का आयुर्वेद में काफी लंबे समय से प्रयोग किया जाता रहा है। ब्राह्मी उच्च स्तर के चिकित्सीय मूल्य वाले अनेक जैव-रासायनिक और ऐंटीऑक्सीडेंट/प्रतिउपचायक यौगिकों के साथ समृद्ध होता है। यह स्मरण शक्ति में वृद्धि करने के साथ-साथ बालों के गिरने से रोकने, अनिद्रा, अल्जाइमर रोग एवं तनाव को कम करने में भी लाभदायक होता है। दूसरी ओर आँवला (*एमब्लिका ओपिफसिनेलिस*)



में विटामिन-सी और उत्तम ऐंटीऑक्सीडेंट गुणों वाले फीनोलिक्स काफी मात्रा में विद्यमान होते हैं। ब्राह्मी मिलाकर बनाये गये आँवला स्क्वाश में 87.7 मिलीग्राम/100 मिलीलीटर के दर में विटामिन-सी और 527.8 मिलीग्राम/100 मिलीलीटर के दर से फीनोलिक्स होते हैं। यह स्क्वैश स्वाद में अच्छा होने के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिये भी काफी फायदेमंद होता है जिसके कारण यह बाजार में अत्यन्त लोकप्रिय है।

प्रमुख कार्यक्रमों का आयोजन

सब्जी के बीज उत्पादन पर कार्यशाला

राष्ट्रीय बीज निगम (एन.एस.सी.), पश्चिम बंगाल के सहयोग से मिशन फॉर इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट ऑफ हॉर्टिकल्चर प्रायोजित सब्जी के बीज उत्पादन पर भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ द्वारा अपने क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, मालदा (पश्चिम बंगाल) में 27 से 28 जुलाई को एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान के निदेशक, डॉ. राजन ने बताया कि पश्चिम बंगाल राज्य सब्जी उत्पादन के क्षेत्र में देश में पहले स्थान



पर है एवं यहाँ सब्जी के बीज की खपत भी बहुत अधिक है। उन्होंने कहा कि गुणवत्ता वाले बीज के उत्पादन से सब्जी का उत्पादन बहुत बढ़ जाता है जिसके कारण राज्य के किसानों द्वारा अपनी आय बढ़ाने के लिये इसे एक उत्तम उद्यम के रूप में भी लिया जा सकता है। राष्ट्रीय बीज निगम क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, मालदा (पश्चिम-बंगाल) किसानों को प्रजनक बीज उपलब्ध कराकर राज्य में बीज उत्पादन को बढ़ावा देने में काफी अग्रसर रहा है। इसी के अंतर्गत किसानों के लाभ के लिये भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, मालदा में बीज प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित कर रहा है। यह सहयोगी कार्यक्रम उत्पादकों से विपणन विशेषज्ञों तक मजबूत बीज श्रृंखला स्थापित करने में मदद करेगा। इस कार्यशाला में सम्मिलित हुए दो सौ पचास आदिवासी किसानों ने चर्चा में हिस्सा लिया। इस अवसर पर राष्ट्रीय बीज निगम ने प्रत्येक प्रतिभागी को उनके खेत में खेती के लिये बीज की थैली प्रदान की गयी।

आम के बाग में मुर्गी पालन पर कार्यशाला

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ ने आम के बाग में मुर्गी पालन पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 09 अगस्त, 2018 को किया। निदेशक डा. शैलेन्द्र राजन, ने अपने संबोधन में कहा कि किसानों की आजीविका स्तर बढ़ाने के उद्देश्य से ही आम के बागों में मुर्गी पालन का प्रदर्शन किया गया। उन्होंने आगे कहा कि एक साल के अंदर ही यह प्रक्रिया इतनी प्रसिद्ध हो गयी कि अब तक यह महिलाबाद के चार गाँवों में अपनायी जा चुकी है। इस तकनीक को प्रसिद्ध करने में मीडिया ने भी सक्रिय भूमिका निभायी, जिसके कारण अब यह तकनीक अन्य फलों के बागों में भी अपनायी जा रही है। भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर, अंडमान और निकोबार द्वीप के पूर्व निदेशक, डॉ. आर.बी. राय ने किसानों के साथ बातचीत के दौरान कहा कि अजोला को पोल्ट्री फीड के रूप में आम के बाग में एककृत किया जाना चाहिए।

वैज्ञानिक रूप से मधुमक्खी पालन पर जागरूकता कार्यक्रम

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान-क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, मालदा (पश्चिम-बंगाल) एवं एक्रिप मधुमक्खी तथा पोलिनेशन द्वारा संयुक्त रूप से जागरूकता शिविर का आयोजन मालदा, सारगाही एवं मुर्शिदाबाद में 13 और 14 अगस्त, 2018 को किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर अनेक प्रख्यात वैज्ञानिक जैसे डॉ. पी.के. चक्रवर्ती (ए.डी.जी. पी.पी. एवं बी.



भा.कृ.अनु.प. नई दिल्ली), डॉ. एस. राजन (आई.सी.ए.आर.-सी. आई.एस.एच, लखनऊ), डॉ. कुमारनाग (एक्रिप, एच. बी. एवं पी. नयी दिल्ली) तथा स्वामी विश्वमयानंद जी (अध्यक्ष, धन्यगंगा के.वी.के., सरगाही) की उपस्थिति में किया गया। 13 अगस्त, 2018 को मालदा जिले के 350 मधुमक्खी पालनकर्ताओं और 14 अगस्त, 2018 को मुर्शिदाबाद जिले से 300 प्रतिभागियों को नवीनतम मधुमक्खी पालन तकनीकों पर प्रशिक्षित किया गया।

बागवानी-उद्यमिता कार्यशाला

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान द्वारा नर्सरी, संरक्षित खेती, मूल्य संवर्धन, जैविक खेती और टिशू कल्चर पर बागवानी-उद्यमिता कार्यशाला का 18 अगस्त 2018 का आयोजन किया गया। बिहार, जम्मू और कश्मीर, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्यों के 16 जिलों के कुल 68 प्रतिभागी (स्नातक से पीएचडी)



और 7 शिक्षित किसानों ने इस कार्यशाला में हिस्सा लिया। फल, शोभादार और सब्जियों की फसलों की नर्सरी में उद्यमशीलता को समर्पित एक विशेष सत्र भी आयोजित किया गया। टिशू कल्चर केला के पौधों की बढ़ती माँग के साथ, जैविक खेती और मशरूम उत्पादन में उद्यमिता चर्चा के लिये महत्वपूर्ण मुद्दे थे। टिशू कल्चर केले के पौधे की बढ़ती माँग के साथ, टिशू कल्चर में उद्यमशीलता और सेकेंडरी हार्डिनिंग ने कुछ महीनों में पैसे कमाने के लिये अनेक स्नातकों को आकर्षित किया है। डॉ. मनीष मिश्र, प्रधान वैज्ञानिक ने कार्यक्रम के सदस्य-सचिव के रूप में समन्वयन किया।

जैव अपशिष्ट प्रबंधन पर कार्यशाला

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान द्वारा 20 अगस्त, 2018 को बागवानी अपशिष्ट प्रबंधन पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान और भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय मात्स्यिकी अनुसंधान संसाधन ब्यूरो, लखनऊ के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। इसका उद्देश्य मंडियों, घरों, किसान के खेतों एवं प्रसंस्करण कारखानों से आने वाले बागवानी उत्पादों के अवशेषों को मूल्य वर्धित उत्पादों में परिवर्तन के विभिन्न तरीकों पर मंथन करना था। डॉ. नीलिमा गर्ग, अध्यक्ष, तुड़ाई उपरांत प्रबंधन विभाग ने "माइक्रोबियल हस्तक्षेप द्वारा बागवानी अपशिष्ट प्रबंधन" पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बल देकर कहा कि अपशिष्ट पदार्थ कार्बनिक घटकों जैसे सेल्यूलोस, स्टार्च, पेक्टिन, विटामिन, खनिज आदि से बहुत समृद्ध हैं। डॉ. राम अवध राम, प्रधान वैज्ञानिक ने भी इस मौके पर फसल और नगरपालिका ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिये व्यवहारिक समाधान पर व्याख्यान दिया।



न्यूट्रीस्मार्ट आदिवासी ग्राम पर कार्यशाला

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान-क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, मालदा ने श्री ज्ञानानंद सरस्वती आश्रम, चेतना, बांकुरा, पश्चिम बंगाल के साथ मिलकर "न्यूट्रीस्मार्ट आदिवासी ग्राम" कार्यशाला का 13 अक्टूबर, 2018 को आयोजन किया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य न्यूट्रीस्मार्ट की अवधारणा को बढ़ावा देना था। आदिवासी गाँव और स्थानीय लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान की



उन्नत फल किस्मों (अंबिका और अरुणिका आम) और अन्य संस्थानों की सब्जी किस्मों को उगाने के लिये प्रोत्साहित किया, जिससे साधन विपन्न गाँवों की माँग को पूरा किया जा सके। कार्यक्रम में 210 से अधिक किसानों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम की व्यवस्था सचिव, डोलपुर श्री ज्ञानानंद सरस्वती आश्रम द्वारा की गयी थी। श्री शुभाशीस बटाब्याल (वाइस चेयरपर्सन, बांकुरा जिला परिषद), कृषि उप निदेशक (प्रशासन), बांकुरा, परियोजना निदेशक (आत्मा), बी.एल.आर.डी.ओ., चेतना आदि गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे। सभी ने अपने अनुभवों को साझा करके कार्यशाला को सफल बनाया।

उपोष्ण क्षेत्र में स्ट्राबेरी उत्पादन : चुनौतियों एवं रणनीतियों पर कार्यशाला

भा.कृ.अनु.प.—केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ ने 29 अक्टूबर, 2018 को “उपोष्ण क्षेत्र में स्ट्राबेरी उत्पादन चुनौतियों एवं रणनीतियों” पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला में 16 किसानों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य स्ट्राबेरी की खेती के लिए किसानों को प्रशिक्षित करके उपोष्ण क्षेत्र में स्ट्राबेरी उत्पादन में आने वाली समस्याओं को कम करना था। इस कार्यशाला का समन्वय डॉ. अशोक कुमार (प्रधान वैज्ञानिक) ने किया।



कृषि समृद्धि मेला

रामकृष्ण मिशन आश्रम, सारगाची एवं धन्यगंगा कृषि विज्ञान केन्द्र, सारगाची में आई.सी.ए.आर के सहयोग से रामकृष्ण मिशन आश्रम, सारगाची में 28-31 दिसंबर, 2018 के दौरान समन्वित कृषि प्रणाली पर राष्ट्रीय कार्यशाला एवं कृषि समृद्धि मेला आयोजित किया। कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. आशीष बैनर्जी, कृषि मंत्री, पश्चिमी बंगाल सरकार ने मुख्य अतिथि के रूप में किया तथा इस अवसर पर डॉ. ए.के. सिंह, डी.डी.जी. (कृषि प्रसार), आई.सी.ए.आर, नई दिल्ली भी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इनके अलावा डॉ. पी.के. चक्रवर्ती, ए.डी.जी., आई.सी.ए.आर, डॉ. एस. राजन, निदेशक, आई.सी.ए.आर. अटारी कोलकाता तथा श्री मुशरफ हुसैन, चैयरमैन, मुर्शिदाबाद जिला परिषद भी कार्यशाला में उपस्थित थे। मेले में हजारों किसानों ने भाग लिया और विभिन्न कृषि अनुसंधान संस्थानों, एन.जी.ओ. एवं स्वयं सहायता समूह के द्वारा लगाए गए स्टॉल को देखा। इस अवसर पर देश के विभिन्न भागों से आए हुए समन्वित कृषि प्रणाली के विशेषज्ञों ने व्याख्यान दिया। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुजान विश्वास, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख धन्य गंगा कृषि विज्ञान केन्द्र, सारगाची तथा डॉ. दीपक नायक, वैज्ञानिक एवं प्रभारी, आई.सी.ए.आर.—सी.आई.एस.एच. आर.आर.एस. मालदा ने किया।

अपशिष्ट से आय पर कार्यशाला

संस्थान के कर्मचारियों को घरेलू अपशिष्ट का उपयुक्त उपयोग करने के विषय में प्रोत्साहित एवं शिक्षित करने के लिए 2 दिसंबर, 2018 को “अपशिष्ट से आय” विषय पर एक कार्यशाला का

आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में तीन व्याख्यान दिये गये जिनमें नगरीय अपशिष्ट को कम करने तथा जलवायु परिवर्तन में कृषि अपशिष्ट प्रबंधन की भूमिका पर जोर दिया गया। कार्यशाला में घरेलू ठोस अपशिष्ट से कंपोस्ट बनाने तथा छत पर बागवानी करके रसायन मुक्त सब्जी उत्पादन के बारे में भी बताया गया। संस्थान के कर्मचारी इस कार्य के लिए पथ प्रदर्शक बन सकते हैं तथा अन्य नागरिकों को इस कार्य के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

समारोह

महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती समारोह

भा.कृ.अनु.प.—केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ के वैज्ञानिकों, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों और कर्मचारियों ने 02 अक्टूबर, 2018 को महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती को बड़े ही धूम-धाम से मनाया। इस अवसर पर कनार स्थित राजकीय जूनियर हाईस्कूल के 50 विद्यार्थियों एवं उनके अध्यापकों ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में श्री कैलाश एवं उनकी टीम ने रामधुन और महात्मा गाँधी के अन्य प्रिय भजनों का गायन किया। राजकीय जूनियर हाईस्कूल के विद्यार्थियों ने गाँधी जी के विषय में लिखी अपनी कविताओं और गीतों का पाठ किया। इसके अलावा डॉ. एस.के. शुक्ला, प्रधान वैज्ञानिक ने महात्मा गाँधी की जीवनी प्रस्तुत की तथा उन पर स्वरचित कविता का पाठ भी किया। तत्पश्चात, डॉ. नीलिमा गर्ग, अध्यक्ष, संस्थान स्वच्छता समिति ने स्वच्छता पखवाड़े के दौरान संस्थान में की गयी स्वच्छता संबंधी गतिविधियों पर बनायी गयी फिल्म को प्रदर्शित किया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, डॉ. शैलेन्द्र राजन ने अपने संबोधन में गाँधी जी के जीवन दर्शन, सत्य, अहिंसा, स्व-अनुशासन, सकारात्मकता, स्वच्छता आदि के संदर्भ में संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जीवन में आत्मसात करने की सलाह दी। कार्यक्रम के आयोजन हेतु व्यवस्था और कार्यक्रम का संचालन डॉ. पी.के. शुक्ल, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा किया गया।



चावल दिवस समारोह

भा.कृ.अनु.प.—केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान के मालदा स्थित क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र ने जनजातीय उप-योजना कार्यक्रम के तहत हबीबपुर ब्लॉक के श्यामदंगा गाँव में 10 अक्टूबर, 2018 को चावल दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन लघु अवधि वाले चावल की किस्म (सहभागी) की उत्तम उत्पादन क्षमता को प्रदर्शित करने के लिये किया गया। चावल की इस किस्म को एक प्रगतिशील उत्पादक द्वारा बीज उत्पादन के लिये अपने 4 एकड़ के प्रक्षेत्र में पैदा किया गया। इस चावल की किस्म को हबीबपुर ब्लॉक हेतु अधिक उपयुक्त पाया गया जहाँ अधिकांशतः चावल के प्रक्षेत्र वर्षा आधारित हैं तथा जलभराव मुक्त हैं। पूरे वर्ष के दौरान दीर्घकालिक सूखे के कारण किसानों ने

गंभीर समस्या देखी है जिसके कारण स्वर्ण धान सर्वाधिक प्रभावकारी रहा है। किसान लघु अवधि वाले धान की उत्पादन क्षमता को देखकर बहुत उत्साहित दिखे तथा आने वाले मौसम में इस प्रौद्योगिकी को अपनाने के लिये तैयार दिखे। इस कार्यक्रम में 300 जनजातीय किसान सम्मिलित हुए जिनमें से 30 अंगीकृत जनजातीय गाँव की अधिकांशतः महिलाएँ थीं। डॉ. दीपक नायक, वैज्ञानिक एवं प्रभारी, भा.कृ.अनु.प.—केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, मालदा ने इस कार्यक्रम का समन्वयन किया।



सतर्कता जागरूकता सप्ताह

भा.कृ.अनु.प.—केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ में 29 अक्टूबर से 03 नवंबर, 2018 सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने 29 अक्टूबर, 2018 को सतर्कता जागरूकता की शपथ ली। श्री धीरेंद्र कुमार, सी.एस.आई.आर.—सीमैप के सेवानिवृत्त मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने संस्थान में "सतर्कता जागरूकता" विषय पर 1 नवंबर, 2018 को व्याख्यान दिया। इस अवसर पर संस्थान के सभी वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।



राष्ट्रीय एकता दिवस समारोह

भा.कृ.अनु.प.—केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ में दिनांक 31 अक्टूबर, 2018 को देश के पूर्व गृह मंत्री, सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया। संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस अवसर पर राष्ट्रीय एकता की शपथ ली। राष्ट्रीय एकता की शपथ के दौरान सभी ने प्रतिज्ञा ली कि वे राष्ट्र की अखंडता के प्रति वचनबद्ध रहेंगे। संस्थान के अंदर अधिकारियों एवं



कर्मचारियों ने राष्ट्रीय एकता दौड़ में भी हिस्सा लिया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, डा शैलेन्द्र राजन ने सरदार वल्लभ भाई पटेल के योगदान के विषय पर जानकारी देते हुए उनके आदर्शों को अंगीकृत किये जाने पर जोर दिया।

विश्व मृदा दिवस समारोह

भा.कृ.अनु.प.—केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ में 5 दिसंबर, 2018 को फार्मर फर्स्ट परियोजना के अंतर्गत किसानों के साथ विश्व मृदा दिवस का आयोजन किया गया। संस्थान की प्रभारी निदेशक, डॉ. नीलिमा गर्ग ने मृदा स्वास्थ्य में सुधार के लिये सूक्ष्मजीवों की भूमिका पर चर्चा की। डॉ. राम अवध राम, प्रधान वैज्ञानिक ने मिट्टी के स्थायी स्वास्थ्य के लिये जैविक निवेश की महत्ता पर चर्चा की। इस अवसर पर मोहम्मद नगर तालुकेदारी गाँव के किसानों में मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित गया। भा.कृ.अनु.प.—केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान के केन्द्रीय अनुसंधान केन्द्र, मालदा में भी विश्व मृदा दिवस का आयोजन किया गया।



स्वच्छता पखवाड़ा उत्सव

भा.कृ.अनु.प.—केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ में 16-30 दिसंबर, 2018 के दौरान स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत स्वच्छता की विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत संस्थान के गेस्ट हाउस और मुख्य द्वार पर स्वच्छता के बैनर लगा कर जागरूकता अभियान चलाया गया और स्वच्छता के प्रति प्रतिज्ञा ली गयी।



किसान दिवस समारोह

भा.कृ.अनु.प.—केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ में पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की 119वीं जयंती के अवसर पर 23 दिसंबर, 2018 को किसान दिवस मनाया गया। इस



अवसर पर संस्थान के निदेशक, डॉ. एस. राजन ने मलिहाबाद ब्लॉक के चार गाँवों के आमंत्रित किसानों को आजीविका के विकास के लिये स्व-सहायता समूहों का गठन करने के लिये प्रेरित किया। उन्होंने मोहम्मद नगर तालुकेदारी गाँव के ग्रामीणों के सरकार द्वारा वित्त पोषित स्वच्छता सुविधाएँ (शौचालय आदि) का लाभ उठाकर खुले में शौच नहीं जाने संबंधी परिवर्तन पर भी प्रकाश डाला। डॉ. वी.के. सिंह और डॉ. एस.के. शुक्ला, प्रधान वैज्ञानिकों ने पोषक तत्वों वाले बगीचों और आय सृजन के लिये ग्रामीण स्तर पर जैविक खाद और वर्मी कंपोस्ट बनाने की महत्ता के विषय में बताया। निदेशक महोदय ने कुछ आमंत्रित किसानों को प्रशस्ति-पत्रों वितरण के माध्यम से उनकी खेती और स्वच्छता अभियान में सार्थक योगदान के लिये सम्मानित किया। इस कार्यक्रम का समन्वयन, डॉ. मनीष मिश्रा, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा किया गया।

मानव संसाधन विकास

किसान प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम

सुनियोजित कृषि विकास केन्द्र, भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, आगरा में 02 अगस्त, 2018 को टपक सिंचाई, प्लास्टिक मल्लिचग बागवानी से संरक्षित खेती का महत्व पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र के कर्मचारियों, 55 किसानों, राज्य बागवानी विभाग, आर.बी.एस. कॉलेज के बागवानी विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापकों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा लिया। डॉ. वी.के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रधान अन्वेषक, सुनियोजित कृषि विकास केन्द्र, भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों



विशेष रूप से फसलों में ड्रिप सिंचाई और प्लास्टिक अनुप्रयोग तकनीक को दोहराया गया तथा इन विषयों से संबंधित साहित्य वितरित किये गये और ड्रिप सिंचाई की पृष्ठभूमि, ड्रिप सिंचाई का लाभ एवं कार्यविधि, ड्रिप लाइन से बाहर कूरना, देखभाल और प्रबंधन, प्रणाली का रख-रखाव, फर्टिगेशन फिल्टर आदि के विषय में फिल्म द्वारा दिखाया गया। 08 अगस्त, 2018 को उत्तर प्रदेश का हाथरस जिले में एक सर्वेक्षण और जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया था। उच्च घनत्व अमरुद वृक्षारोपण की स्थिति और प्रदर्शन के विषय में किसानों के साथ बातचीत कर ऑकलन किया गया। यह देखा गया कि आई.टी.सी. की मदद से उच्च घनत्व अमरुद का इस जिले में 250-300 एकड़ क्षेत्र में प्रसार हो चुका है।

मध्य प्रदेश बागवानी अधिकारियों को प्रशिक्षण

मध्य प्रदेश के बागवानी अधिकारियों के लिये आम और अमरुद के उत्पादन, संरक्षण तथा तुड़ाई उपरांत प्रौद्योगिकी पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ में दिनांक 06 से 10 अगस्त, 2018 तक किया गया। प्रशिक्षण का आयोजन आम और अमरुद उत्पादन के विभिन्न प्रौद्योगिकियों पर किया गया।



बागवानी अधिकारियों से वार्ता के क्रम में संकेत प्राप्त हुआ कि किसान विशेष रूप से अमरुद की बागवानी में रुचि रखते हैं। प्रशिक्षण के दौरान अमरुद के लिये विकसित अति सघन बागवानी प्रौद्योगिकी विषय पर जानकारी दी गयी।

कृषि अनुसंधान सेवा के परिवीक्षाधीन वैज्ञानिकों के लिये प्रक्षेत्र अनुभव प्रशिक्षण (एफईटी)

भा.कृ.अनु.प.-नार्म, हैदराबाद से आये 06 कृषि अनुसंधान सेवा के परिवीक्षाधीन वैज्ञानिक ने संस्थान में 21 अगस्त से 10 सितंबर, 2018 प्रक्षेत्र प्रशिक्षण में हिस्सा लिया। कृषि अनुसंधान सेवा के इन अधिकारियों ने डॉ. आर.ए. राम, प्रधान वैज्ञानिक और डॉ. मनीष मिश्रा, प्रधान वैज्ञानिक के मार्गदर्शन में मलिहाबाद के नबीपनाह गाँव में प्रक्षेत्र प्रशिक्षण प्राप्त किया और गाँव की सामाजिक, कृषि और गतिशीलता पर समय रेखा विकसित की। उन्होंने गाँव की प्रमुख समस्याओं का विश्लेषण भी किया। उन्होंने गाँव और संस्थान स्तर पर अपने निष्कर्षों की प्रस्तुति की।



उद्यमिता विकास के लिए मॉडल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ ने बाजार आधारित उत्पादन तथा बागवानी फसलों का प्रसंस्करण द्वारा उद्यमिता विकास विषय पर एक आदर्श प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन 10-17 सितंबर, 2018 के दौरान किया।



भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ
ICAR-Central Institute for Subtropical Horticulture, Lucknow



कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का वित्त पोषण किया गया था। सात अलग-अलग राज्यों उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, छत्तीसगढ़, ओड़िशा, राजस्थान और मध्य प्रदेश से जिला बागवानी अधिकारी/ग्रामीण विकास अधिकारी/विस्तार विभाग के कर्मियों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। उन्हें उद्यमशीलता पर पारिस्थितिकी तंत्र, स्टार्ट-अप, नर्सरी, फ्लोरीकल्चर आधारित उद्यमों, बाग आधारित मुर्गी पालन, विदेशी फलों जैसे स्ट्रॉबेरी और पेपिनो का उत्पादन, फलों और सब्जियों का प्रसंस्करण, हर्बल सौंदर्य प्रसाधन, उड़नशील तेल आसवन सब्जियों की हाइड्रोपोनिक्स खेती, मशरूम उत्पादन, जैविक खेती, जैविक उत्पादन के निरीक्षण और प्रमाणन, एफएसएसआई पंजीकरण, संरक्षित खेती, जैव उर्वरक उत्पादन, पैकेजिंग, ब्रांडिंग, खाद्य सुरक्षा कानून, शुष्क पुष्प उत्पादन प्रौद्योगिकी, आदि विषयों के विषय में प्रशिक्षित किया गया। आई.सी.ए.आर., सी.एस.आई.आर., आई.आई.टी., एस.ए.यू. और कॉर्पोरेट सेक्टर से आमंत्रित विशेषज्ञों ने व्याख्यान प्रस्तुत किये। विशेषज्ञों ने प्रगतिशील किसानों और नये उद्यमियों के साथ बातचीत की जिन्होंने बागवानी में अपना नाम बनाया है। डॉ. मनीष मिश्रा, प्रधान वैज्ञानिक कार्यक्रम के पाठ्यक्रम निदेशक थे।

फलों के प्रमाणित फार्म सलाहकार में पेशेवर उत्कृष्टता के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम

फलों के प्रमाणित फार्म सलाहकार में पेशेवर उत्कृष्टता के लिये 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम भा.कृ.अनु.प.—केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ द्वारा 3-17 अक्टूबर, 2018 को आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का वित्त पोषण राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान (मैनेज), हैदराबाद द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में भारत के अलग-अलग राज्यों महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु और मिजोरम के प्रशिक्षुओं ने हिस्सा लिया। इस प्रशिक्षण के अंतर्गत प्रशिक्षुओं को गहन ज्ञान प्रदान किया गया और चयनित फसलों से संबंधित नवीनतम तकनीकें प्रदान की गयी। प्रशिक्षण पूरा करने के पश्चात प्रशिक्षुओं को तकनीकी मार्गदर्शन के लिये एक वर्ष की अवधि के लिये संबंधित अनुसंधान संस्थान आवंटित किया गया जिससे वे क्षेत्रीय स्तर की चुनौतियों को जाने व उनका सामना कर सकें। इसके अलावा, मैनेज द्वारा प्रमाणित फार्म सलाहकार विशेषज्ञ का प्रमाण-पत्र दिया गया तथा उनके नाम को प्रमाणित कृषि सलाहकार विशेषज्ञ के रूप में वेबसाइट पर सूचीबद्ध किया जाएगा।



बागवानी फसलों की जैविक खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

भा.कृ.अनु.प.—केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ द्वारा 03 से 06 अक्टूबर, 2018 तक 4 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम "बागवानी फसलों की कार्बनिक खेती" का आयोजन



किया गया। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों ने प्रशिक्षण में हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में भारत के विभिन्न राज्यों महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, त्रिपुरा, चंडीगढ़ और दिल्ली से आये 30 प्रशिक्षुओं ने हिस्सा लिया।

बागवानी में मूल्य संवर्धन पर प्रशिक्षण

भा.कृ.अनु.प.—केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ द्वारा 22-25 अक्टूबर, 2018 को राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान (मैनेज), हैदराबाद द्वारा वित्त पोषित 4 दिवसीय पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम "बागवानी में मूल्य संवर्धन के अवसर" विषय पर संस्थान के रायबरेली रोड परिसर में आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में भारत के अलग-अलग राज्यों के प्रशिक्षु सम्मिलित हुये।



मॉडल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

भा.कृ.अनु.प.—केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ में विस्तार निदेशालय, कृषि, सहयोग और किसान कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली के समर्थन सहायता से "बागवानी के हस्तक्षेप के माध्यम से कृषि महिलाओं की खाद्य और पोषण सुरक्षा" पर एक मॉडल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम 13-20 नवंबर, 2018 के दौरान आयोजित किया गया। इस एम.टी.सी. में देश के विभिन्न हिस्सों से आये राज्य सरकार के अधिकारियों और विस्तार कार्यकर्ताओं, जिला कृषि और बागवानी अधिकारियों सहित के.वी.के./आई.सी.ए.आर. संस्थानों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के विस्तार विशेषज्ञों के ज्ञान के उन्नयन और कौशल सुधार की सुविधा प्रदान की। संसाधनों की कमी की स्थितियों के अंतर्गत उच्च पारिश्रमिक बागवानी फसलों की खेती, नर्सरी उद्योग में कृषि महिलाओं की भागीदारी की संभावनाएँ, लघु प्रसंस्करण उद्योग, नयी किस्मों और संकर प्रजाति के उपयोग से भोजन और पोषण सुरक्षा में सुधार करने के तरीके, आहार विविधीकरण, सीमित संसाधनों के साथ पोषक-उद्यान की स्थापना, मशरूम की खेती आदि जैसे व्यापक विषयों को विषयगत पाठ्यक्रम ने सम्मिलित किया गया। डॉ. अंजू बाजपेई, प्रधान वैज्ञानिक इस पाठ्यक्रम की निदेशक थीं।

जैविक खेती पर प्रशिक्षण

दीनदयाल उपाध्याय राज्य ग्रामीण विकास संस्थान, बख्शी का तालाब, लखनऊ के छब्बीस अधिकारियों ने 15 नवंबर, 2018 को भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ के परिसर और प्रायोगिक क्षेत्र का दौरा किया। डॉ. आर. ए.राम, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा संस्थान की अनुसंधान और विकास गतिविधियों के विषय में संक्षिप्त परिचय दिये जाने के बाद उन्हें जैविक खेती पर प्रशिक्षण दिया।

तुड़ाई उपरांत प्रबंधन में महिला किसानों की क्षमता विकास

राज्य कृषि प्रबंध संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ से 88 महिला किसानों और विस्तार अधिकारियों ने 22 और 29 नवंबर, 2018 को भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ के परिसर और खाद्य प्रसंस्करण प्रयोगशाला का दौरा किया। डॉ. पवन सिंह गुर्जर, वैज्ञानिक और इं.डी.के.शुक्ल, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी ने महिला किसानों और कार्मिकों को संस्थान द्वारा तुड़ाई उपरान्त संबंधी प्रौद्योगिकियों पर प्रशिक्षण दिया।



एटीएम/बीटीएम का प्रशिक्षण

राज्य कृषि प्रबंध संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ से आये 48 एटीएम/बीटीएम और उप परियोजना निदेशक ने 28 नवंबर, 2018 को भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ के परिसर और प्रायोगिक प्रक्षेत्र का भ्रमण किया। इस दौरान संस्थान के कर्मचारियों ने अनुसंधान और संस्थान की विकासात्मक गतिविधियों पर जानकारी प्रदान की। इसके बाद खेत अभ्यास, उर्वरक अनुप्रयोग और आम में कीट प्रबंधन पर व्याख्यान दिया।

ग्रामीण महिलाओं का जागृति सशक्तिकरण

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ के आर.आर.एस., मालदा ने आदिवासी उप-योजना कार्यक्रम के वित्तीय सहायता से 1-2 दिसंबर, 2018 को दो दिन का जाग्रति "आदिवासी महिलाओं का सशक्तिकरण" कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य "आदिवासी ग्रामीणों को नयी तकनीकों को अपनाकर अपनी आय में दोगुना करने के लिए जागरूक और प्रेरित करना और आदिवासी महिलाओं को अलग-अलग क्षेत्रों और संबद्ध क्षेत्रों में सशक्त



बनाना था, ताकि उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके। कार्यक्रम का उद्घाटन स्वामी विश्वमयानंद जी (आरएमए, सरगाही) एवं डॉ. एस. राजन, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ द्वारा किया गया। डॉ. दीपक नायक (वैज्ञानिक और प्रभारी, भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान आर.आर.एस., मालदा) ने कार्यक्रम का समन्वय किया। अन्य गणमान्य व्यक्ति जैसे डॉ. आर.के. पाल (पूर्व निदेशक, आई.सी.ए.आर.-एन.आर.सी.पी., सोलापुर), श्री एस. सेन (पूर्व बैंक प्रबंधक), श्री पिंटो (सामाजिक कार्यकर्ता) भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

कंटेनर बागवानी और उच्च घनत्व रोपण पर कौशल विकास

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ में 3-4 दिसंबर, 2018 को किसान उद्यानिकी विभाग, बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश के दो कृषि अधिकारियों के साथ चौबीस किसानों ने दो दिनों के इस प्रशिक्षण-सह-प्रदर्शन यात्रा में हिस्सा लिया। प्रशिक्षण-सह-प्रदर्शन के दौरान सहभागियों ने संस्थान के प्रयोगात्मक प्रक्षेत्रों और विभिन्न प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया और संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न प्रौद्योगिकियों की जानकारी प्राप्त करने के लिये वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की। प्रशिक्षणार्थियों को कंटेनर बागवानी, आम एवं अमरुद की सघन बागवानी के विषय में बताया गया। प्रशिक्षुओं ने डॉ. के.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक के साथ कंटेनर बागवानी, अमरुद और आम का घनत्व रोपण पर विचार-विमर्श किया



नर्सरी प्रबंधन पर प्रशिक्षण

राज्य कृषि प्रबंध संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ से आये 50 किसानों ने 8 दिसंबर, 2018 को भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ का भ्रमण किया। डॉ. ए. के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक ने उन्हें नर्सरी फल फसलों के प्रबंधन के विषय में विस्तार से बताया।



वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, आर.आर.एस., मालदा ने 12 दिसंबर, 2018 को जनजातीय उप-योजना कार्यक्रम के तहत आदिवासी युवाओं और महिलाओं को गुणवत्ता वाले शहद उत्पादन और कुशल परागण के लिये सशक्त बनाने के



उद्देश्य के साथ "वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण-सह-उत्पादन कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि, डॉ. रॉबर्ट स्पूनर हार्ट (प्रोफेसर, पश्चिमी सिडनी विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया) ने किया। डॉ. दीपक नायक, वैज्ञानिक और प्रभारी, भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, आरआरएस, मालदा ने कार्यक्रम का समन्वयन किया।

जनजातीय उपयोजना के तहत भागीदारी

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र मालदा (पश्चिम-बंगाल) ने 21 दिसंबर, 2018 आदिवासी उप-योजना कार्यक्रम के अंतर्गत समुदाय भागदारी के माध्यम से एक पहल के रूप में पानी उपयोगकर्ता समूहों के गठन से सूक्ष्म सिंचाई को बढ़ावा देने हेतु नये घटक "भागीदारी" का उद्घाटन किया। पानी की गंभीर समस्या को देखते हुए और सीमित जल स्रोत की स्थिति का अवलोकन कर हबीबपुर ब्लॉक के अपनाये आदिवासी गाँव, मालदा में "भागदारी" की अवधारणा की गयी। नये घटक "भागदारी" के तहत पाँच जल उपयोगकर्ता समूह बनाये गये। फसलों की बेहतर पैदावार और गुणवत्ता के लिये एक बार में 5 हेक्टेयर क्षेत्र के अपने खेतों में फसलों की सिंचाई के लिये सामान्य पानी के स्रोतों का उपयोग कर मशीनों की सुविधा प्रदान करने के टपक सिंचाई लिये भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ एवं जनजातीय पानी उपयोगकर्ता समूह के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया।



माली प्रशिक्षुओं का क्षमता निर्माण

स्टेट इंस्टीट्यूट कृषि प्रबंधन रहमानखेड़ा, लखनऊ से 35 माली प्रशिक्षु, 24 दिसंबर, 2018 को संस्थान परिसर और प्रायोगिक क्षेत्र का दौरा किया। निदेशक डॉ. एस. राजन ने उन्हें संस्थान द्वारा



विकसित विभिन्न तकनीकों के बारे में अवगत कराया। प्रशिक्षुओं ने संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न मुद्दों पर दिए व्याख्यान में भाग लिया।

उत्तर प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत प्रशिक्षण

उत्तर प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत 27 से 29 दिसंबर, 2018 तक भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ द्वारा "बागवानी फसलों का नर्सरी प्रबंधन" विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मलिहाबाद और मॉल ब्लाक में नर्सरी कार्य के स्व-सहायता समूह से जुड़ी कुल 114 महिलाओं ने भाग लिया। वैज्ञानिकों द्वारा



प्रशिक्षुओं को फलों के पेड़ के रख-रखाव, पानी और पोषक तत्वों का प्रबंधन, रोग और कीट प्रबंधन, फलों के प्रसंस्करण और मूल्य वर्धन के बारे में गहन प्रशिक्षण प्रदान किया गया था। डॉ. एस.आर. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक ने पूर्वोक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय किया। इसके अलावा प्रशिक्षुओं को नर्सरी और प्रयोगात्मक खेत के बारे में भी अवगत कराया गया।

मुख्यमंत्री खेत तीर्थ योजना के लिए प्रशिक्षण

मुख्यमंत्री खेत तीर्थ योजना के तहत 28 दिसंबर, 2018 को नरसिंहपुर, मध्यप्रदेश के दो कृषि अधिकारियों के साथ उन्तालीस किसानों को "उच्च मूल्य सब्जियों की संरक्षित खेती और अमरुद के उच्च घनत्व रोपण" विषय पर प्रशिक्षित किया गया। सुनियोजित कृषि विकास केन्द्र के कर्मचारियों ने किसानों को ड्रिप सिंचाई, पॉलिथीन मल्लिंग, उच्च घनत्व रोपण, आम और अमरुद की नवीनतम उत्पादन तकनीक और कायाकल्प विषयों पर प्रशिक्षण दिया।



समुदाय आधारित संगठन (सीबीओ) के साथ समझौता ज्ञापन

देश में बदलते परिदृश्य के मद्देनजर समुदाय आधारित संगठन (सीबीओ), एफपीओ, एसएचजी अब तकनीकी सहायता के लिए राष्ट्रीय संस्थानों की ओर उन्मुख हो रहे हैं। अवध आम उत्पादक एवं बागवानी समिति, नबीपनाह, मलिहाबाद, और भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ ने आम और अमरुद के रोगों के प्रबंधन, आम के बाग आधारित कुक्कुट पालन और उद्यानिकी फसलों के तुड़ाई उपरांत प्रबंधन तकनीक के विस्तार



के लिये समझौता ज्ञापन किया है। समिति में लगभग 270 पंजीकृत सदस्य हैं। इस कदम से सीबीओ के माध्यम से संस्थान की प्रौद्योगिकियाँ हितधारकों तक आसानी से पहुँच सकेंगी। श्री उपेन्द्र कुमार सिंह, सचिव, एएयूडबीएस, नबीपनाह ने इस अवसर पर कहा कि 20 से अधिक आम उत्पादकों ने फार्मर्स फर्सट प्रोजेक्ट के तहत जीएपी का पालन किया और बाद में मंडी परिषद की सहायता से अपने आमों को हैदराबाद बाजार तक पहुँचाया जहाँ 60.00 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से लगभग दोगुनी आय प्राप्त की। उन्होंने उम्मीद जताई कि इस प्रकार के समझौतों से मलिहाबाद के कृषक समुदाय को बड़ी सहायता मिलेगी।

बैठकें

- संस्थान प्रबंध समिति की 28वीं बैठक डॉ. शैलेन्द्र राजन, निदेशक की अध्यक्षता में 10 अगस्त, 2018 को आयोजित की गयी। इस बैठक में डॉ. बी.पी. राम, मुख्य बागवानी विशेषज्ञ, उत्तर प्रदेश सरकार, डॉ. नीलिमा गर्ग, अध्यक्ष, तुड़ाई उपरांत प्रबंधन प्रभाग, डॉ. घनश्याम पाण्डेय, अध्यक्ष फसल उत्पादन तथा श्री रविन्द्र नाथ मलिक, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे। अपने संबोधन के दौरान समिति के अध्यक्ष तथा निदेशक ने सभी सदस्यों को वर्ष 2017-18 के दौरान की संस्थान की उपलब्धियों के विषय में बताया। डॉ. पी.के. शुक्ल, प्रधान वैज्ञानिक तथा प्रभारी अध्यक्ष ने प्रभाग की उपलब्धियों के विषय में विस्तारपूर्वक बताया। श्री आर.एन. मलिक, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने संस्थान प्रबंध समिति की कार्य सूची को सदस्य सचिव के रूप में प्रस्तुत किया जिन पर बैठक के दौरान चर्चा की गयी।
- डॉ. शैलेन्द्र राजन नयी दिल्ली स्थित नास परिसर में 18 अक्टूबर, 2018 को वर्टीकल खेती पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में सम्मिलित हुये तथा फलों एवं सब्जियों में वर्टीकल खेती की संभावनाओं पर पेपर प्रस्तुत किया।
- डॉ. शैलेन्द्र राजन ने नयी दिल्ली स्थित भा.कृ.अनु.प.-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नयी दिल्ली में दिनांक 03 नवंबर, 2018 को ग्रामीण समृद्धि के लिये उद्यमिता एवं नये रास्ते : 2022 तक किसानों की आय दुगुनी करना विषय पर आयोजित मस्तिष्क मंथन में हिस्सा लिया।
- डॉ. शैलेन्द्र राजन ने नयी दिल्ली स्थित कृषि भवन में सेंट्रल सब कमेटी ऑन क्रॉप स्टैनडर्ट्स, नोटिफिकेशन एण्ड रिलीस ऑफ वैराइटीस फॉर हार्टीकल्चर क्रॉप में हिस्सा लिया। इस बैठक की अध्यक्षता ए.के. सिंह, उप महानिदेशक (फसल विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नयी दिल्ली द्वारा की गयी।
- डॉ. शैलेन्द्र राजन ने 14 सितंबर, 2018 को राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, गुरुग्राम, हरियाणा में आयोजित समूह बैठक में हिस्सा लिया तथा प्रस्तावित स्कीम पर विचार-विमर्श किया।

पुरस्कार

- डॉ. पी.के. शुक्ल, प्रधान वैज्ञानिक को उनके पादप रोग के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिये "सतत ऑर्गेनिक एग्री-हॉर्टी सिस्टम" में "डॉक्टर कृषि एवं बागवानी विकास संस्था" द्वारा लखनऊ में 28-30 नवंबर, 2018 तक आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में रिकॉग्निशन अवार्ड से सम्मानित किया गया।
- डॉ. गुंडप्पा, वैज्ञानिक को उनके कीट विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिये "सतत ऑर्गेनिक एग्री-हॉर्टी सिस्टम" में "डॉक्टर कृषि एवं बागवानी विकास संस्था" द्वारा लखनऊ में 28-30 नवंबर, 2018 तक आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- डॉ. तहसीन फातिमा को उनके पादप रोग के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिये "सतत ऑर्गेनिक एग्री-हॉर्टी सिस्टम" में "डॉक्टर कृषि एवं बागवानी विकास संस्था" द्वारा लखनऊ में 28-30 नवंबर, 2018 तक आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- डॉ. ए.के. त्रिवेदी, प्रधान वैज्ञानिक को रीसेन्ट ट्रेन्ड्स एण्ड एम्सपेशियेन्टल एप्रोचिज इन साइंस एवं हेम्वालॉजी नेचर एण्ड मैनेजमेंट विषय पर जोधपुर में 23-24 दिसंबर, 2018 तक आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में सोसाइटी फॉर साइंस एंड नेचर द्वारा प्लांट फिजियोलॉजी द्वारा उत्कृष्ट योगदान के लिए "साइंटिस्ट ऑफ द ईयर 2018" पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

स्टूडेंट रेडी प्रोग्राम

- जैव विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, श्री रामस्वरूप मेमोरियल यूनिवर्सिटी, लखनऊ से अस्सी छात्रों ने 22 सितंबर, 2018 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के साथ दिशा निर्देशों के अनुपालन में "स्थायी कृषि" पर एक पाठ्यक्रम में भाग लेने के लिए भा.कृ.अनु.प.-के.उ.बा.सं., लखनऊ का दौरा किया। छात्रों ने संस्थागत विभिन्न सुविधाएँ जैसे कि जीन बैंक, पॉली-हाउस, टपक सिंचाई, मल्टिंग, प्रशिक्षण, सब्जियों का प्रसंस्करण और फलों और सब्जियों से संबंधित मूल्यवर्धित उत्पाद फसलों की जानकारी से लाभान्वित हुए।



- भालचंद्र शिक्षा और प्रबंधन संस्थान, दुबग्गा, लखनऊ के शिक्षकों के साथ सोलह छात्रों ने 31 अक्टूबर, 2018 को भा.कृ. अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ के प्रायोगिक क्षेत्रों और विभिन्न प्रयोगशालाओं का दौरा किया और संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों के बारे में वैज्ञानिकों के साथ गहन बातचीत की।



- सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज (इलाहाबाद) के शिक्षकों के साथ बीएससी (कृषि) के दो सौ ग्यारह छात्रों ने 11, 16 नवंबर और 7 दिसंबर, 2018 को भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ के विभिन्न प्रायोगिक क्षेत्रों और प्रयोगशालाओं का दौरा किया एवं डॉ. वी.के. सिंह और डॉ. नरेश बाबू, प्रधान वैज्ञानिकों ने छात्रों के साथ वार्ता के क्रम में संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकों पर जानकारी दी।



- क्षेत्रीय खाद्य अनुसंधान और विश्लेषण प्रशिक्षु केंद्र, लखनऊ (आर.एफ.आर.ए.सी.) के छह छात्रों ने 22 दिसंबर, 2018 को भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ के सूक्ष्म जीव विज्ञान, उपकरण और खाद्य प्रसंस्करण प्रयोगशालाओं का दौरा किया। डॉ. ए.के. भट्टाचारजी, प्रधान वैज्ञानिक ने प्रशिक्षुओं को संस्थान के फसल तुड़ाई उपरांत प्रबंधन प्रभाग द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकों के बारे में सूचित किया।



कार्मिक

पदभार ग्रहण

वैज्ञानिक

1. डॉ. गोविन्द कुमार, वैज्ञानिक (कृषि सूक्ष्मजीव विज्ञान) ने भा.कृ.अनु.प.-नाम, हैदराबाद में प्रशिक्षण उपरांत 06.10.2018 को संस्थान में कार्य ग्रहण किया।
2. डॉ. निधि कुमारी, वैज्ञानिक (पादप रोग) ने भा.कृ.अनु.प.-नाम, हैदराबाद में प्रशिक्षण समाप्त कर 09.10.2018 को संस्थान में पदभार ग्रहण किया।

तकनीकी

1. मोहम्मद रियाज (टी-3) ने तकनीकी सहायक के पद पर संस्थान में 25.10.2018 को कार्य ग्रहण किया।
2. श्री हेमंत कुमार पांडेय (टी-1) ने तकनीशियन के पद पर संस्थान में 20.11.2018 को कार्य ग्रहण किया।
3. श्री आलोक शुक्ल (टी-1) ने तकनीशियन के पद पर संस्थान में 24.11.2018 को कार्य ग्रहण किया।
4. श्री अरविन्द कुमार सिंह (टी-1) ने तकनीशियन के तौर पर संस्थान में 27.11.2018 को पदभार ग्रहण किया।
5. श्रीमती मोनिका सिंह (टी-1) ने तकनीशियन के पद पर संस्थान में 01.12.2018 को कार्य ग्रहण किया।
6. श्री सत्येंद्र सिंह (टी-1) ने तकनीशियन के पद पर संस्थान में 01.12.2018 को कार्य ग्रहण किया।

प्रशासनिक

1. कुमारी श्रेया श्रीवास्तव को कनिष्ठ लिपिक के रूप में 22.11.2018 को कार्य ग्रहण किया।
2. श्री सुरेंद्र को कनिष्ठ लिपिक के पद में 17.12.2018 को कार्य ग्रहण किया।

सेवानिवृत्ति

तकनीकी

1. श्री गंगा शरण, तकनीकी अधिकारी दिनांक 31.10.2018 को संस्थान से 31.10.2018 को सेवानिवृत्त हुए।

कुशल सहायक कर्मचारी

1. श्री रूप चाँद, एस.एस.एस. दिनांक 31.08.2018 को संस्थान से सेवानिवृत्त हुए।
2. श्री राम कुमार, एस.एस.एस. दिनांक 30.11.2018 को संस्थान से सेवानिवृत्त हुए।
3. श्री श्रीपाल, एस.एस.एस. दिनांक 31.12.2018 को संस्थान से सेवानिवृत्त हुए।

शोक सन्देश

प्रशासनिक

1. श्री अमित सिंह, कनिष्ठ लिपिक का दिनांक 19.10.2018 को आकस्मिक देहावसान हो गया।

कुशल सहायक कर्मचारी

1. श्री राम आश्रेय, एस.एस.एस. का दिनांक 17.11.2018 को आकस्मिक देहावसान हो गया।



मनीष मिश्रा, ए.के. भट्टाचारजी, के.के. श्रीवास्तव, ए.के. त्रिवेदी, पी.एस. गुर्जर, प्रीति शर्मा, धीरज शर्मा एवं पी.के. शुक्ल

प्रकाशन एवं संपर्क : शैलेन्द्र राजन, निदेशक

संकलन एवं संपादन

भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान

(आई. एस. ओ. 9001 : 2008 संस्थान)

रहमानखेड़ा, डाकघर काकोरी, लखनऊ - 226 101

वेबसाइट : www.cish.res.in, ई-मेल: cish.lucknow@gmail.com

फोन : +91-522-2841022, 24 ; फैक्स: +91-522-2841025

